राजस्थान का लोक संगीत

लोक एवं लोक संगीत क्या है?

'लोक' शब्द में किसी क्षेत्र तथा वहाँ रहने वाली जनता दोनों का भाव सम्मिलित है। लोक संगीत के स्वर सदियों से जन–मन को आंनदित करते रहे है। इसी सुरीली परम्परा को लोग पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रहण करते चले जाते हैं, यही लोक संगीत है। लोक संगीत सीधे सादे सामान्य लोगों के सुख–दुःख, प्रेम, करूणा, आनन्द, संवेग की संगीतमयी अनुभूतियाँ हैं। महात्मा गाँधी ने लोक संगीत को ''संस्कृति का पहरेदार'' कहा है। शास्त्रीय संगीत की साधना में आवश्यक प्रशिक्षण तथा शास्त्र व क्रियात्मक दोनों पक्षों की साधना है, वहीं लोक संगीत सहज भावनाओं से प्रकट होता है तथा परम्परा से हस्तांतरित होता आया है। लोक संगीत की साधना में शास्त्रीय अध्ययन व आवश्यक क्रियात्मक प्रशिक्षण दोनों पक्षों की आवश्यकता नहीं है।

लोक संगीत में गीतों का महत्व अधिक है ,वाद्यों का सहयोग पाकर ये गीत अधिक सुंदर व अंलकृत हो जाते है तथा आनंदमयी भावों को शारीरिक अंगों द्वारा नृत्य रूप में प्रदर्शन करना लोक नृत्य की संज्ञा पाते है। इसी आधार पर लोक संगीत की अपनी कुछ निजी विशेषताएँ हैं–

लोक संगीत की विशेषताएँ –

1. लोक संगीत सामूहिक है। ये लोक जीवन की सम्पत्ति हैं तथा वैयक्तिकता से परे है।
2. ये परम्परा से हस्तांतरित व शोधित होता रहता है एवं मौखिक है।
3. लोक संगीत यथार्थवादी, सहज अनुभूतिपूर्ण व भावनाओं की गहराई युक्त होता है।
4. लोक संगीत आनन्द, आशा, उत्साह, सकारात्मकता व सरलता से पूर्ण होता है। अतः ये लोक जन जीवन को नई ऊर्जा प्रदान करता है।
5. पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्ध लोक गीतों की विशेषता है। पर्वों, त्यौहारो, धार्मिक मान्यताओं, रीति–रिवाजों, रहन–सहन, वेशभूषा, संस्कारों के साथ इनका अटूट सम्बन्ध है।
6. धार्मिक मान्यता, मूल परम्परा, जन विश्वास, लोक आचरण, इतिहास व संस्कृति विषयों के अध्ययन हेतु लोकगीत महत्वपूर्ण सामग्री है।
7. लोक गीतों में स्वर संख्या सीमित होती है शब्दों के साथ लय संतुलन चलता है।

राजस्थान का लोक संगीत–

राजस्थान लोक संगीत की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध प्रांत है। यहाँ का इतिहास संघर्ष, वीरता, त्याग, स्नेह, प्राकृतिक विविधता से युक्त बहुरंगी संस्कृति का मंच है। (गायन/वादन/नृत्य) तीनों की यहाँ समृद्ध परम्परा है। राजस्थान के लोक संगीत के आकर्षण में सम्पूर्ण विश्व के पर्यटक खिंचे चले आते है। लोक

देवी–देवता– भैरूजी, झूंझार जी, रामदेव जी,तेजाजी, पाबूजी, हडबूजी, सतीमाता आदि की गाथाएँ, मठ, धामधूणियाँ, विभिन्न जातियों– लंगा, मांगणियार, कामड़, भाट, ढोली, नट, कलावंत, राणा, भोपा, सांसी कंजर मिरासी, जोगी राव आदि की बहुरंगी संस्कृति तथा पारिवारिक अवसरों, तीज–त्यौहारों, विवाह, मेले आदि लोक संगीत के अध्ययन हेतु विस्तृत विषय सामग्री है।

यहाँ के लोक संगीत का हम तीन उपभागों के अन्तर्गत अध्ययन करते हैं–

1. राजस्थान के लोकगीत
2. राजस्थान के लोक वाद्य
3. राजस्थान के लोक नृत्य

राजस्थान के लोक गीत – राजस्थानी लोक गीतों को अध्ययन की सुलभता के लिए कई उपवर्गों में बाँटा जाता रहा है, जैसे–

– **जनसाधारण के गीत**

मौसम, त्यौहार,, संस्कार, देवी–देवता सम्बन्धी गीत

– **क्षेत्र विशेष के गीत**

मरू प्रदेश, पर्वतीय क्षेत्र, मैदानी क्षेत्र के गीत

– **व्यावसायिक जातियों के गीत**

लंगा, मिरासी, कलावंत, राव, भोपे, ढोलीआदि के गीत।

राजस्थानी लोक गीतों में राग व ताल –

संगीत शास्त्र की दृष्टि से यहां के गीतों में मल्हार, काफी, आसावरी, देस, मांड सोरठ, भूप, कल्याण, सारंग, कालिंगड़ा, खमाज, पीलू आदि रागों से युक्त गीत उपलब्ध है, तालों में कहरवा व दादरा तो लोक गीतों की आत्मा हैं ही इनके पश्चात् दीपचंदी, रूपक, चाचर आदि है। लोक शैली में इनके नामों को तोयछो, गैर, मटकू, अढैया आदि से भी जानते है।

गायक वर्ग –

पारिवारिक व सामाजिक अवसरों पर तो प्रायः सभी लोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से लोक गीतों के गायन में अपनी भूमिका निभाते है जैसे – भजन, रात्रि जागरण, पार गीत, त्यौहार, विवाह आदि संस्कारों पर। इसके अलावा राजस्थान की कुछ विशेष जातियाँ जो संगीत द्वारा ही अपनी आजीविका चलाती है, इनमें, लंगा, मांगणियार, कामड़, भाट, ढोली, नट, कलावंत, राणा, भोपा, सांसी कंजर आदि है।

प्रमुख गीत –

इंडोनी, पीपली, मांड, कांगसियों, गोरबंद, पणिहारी, हिचकी, दारूड़ी काजलियों, काछबो, मूमल, घूमर, लूर, ओल्यूं, कुरजां, गणगौर, रसिया, बना–बनी, पांवणा, जच्चा गीत, व अनेक पारिवारिक अवसरों व लोक देवी–देवताओं के प्रचलित गीत है। राजस्थान के कण–कण में बसे ये गीत यहाँ की लोक सुषमा को प्रसारित करते है। राजस्थान में कथा गीत भी महत्वपूर्ण है। ढोला–मारू, सुल्तान–निहालदे, गोपीचंद,

भरथरी, तेजाजी, पाबूजी,रामदेव जी, नसरी जी रो मायरो आदि प्रमुख कथा गीत हैं। ये कथा गीत सामान्य गीतों से अधिक लम्बे व कथाओं पर आधारित होते है।

कुछ प्रसिद्ध लोक गीत

विनायक (राग मिश्र काफी, ताल दीपचंदी)

चलो हो गजानन जीसीड़ा रे चालां
लगन लिखाई बेगा आवां हो गजानन

कोटा री गादी पे नोबत बाजे
नोबत बाजे इंदरगढ़ गाजे
झनन–झनन झालर बाजे हो गजानन
(विवाह सम्बन्धी गीत)

मांड (खमाज अंग से, ताल दादरा)

केसरिया बालम आओसा
पधारो म्हारो देस

सोणे री धरती जठे, चांदी रो असमाण
रंग रंगीलो रस भरयो, म्हारों प्यारो राजस्थान, केसरिया .....

साजण आया ए सखी कांई मनवार करां
थाल भरां गज मोतियां और ऊपर नैंण धरां, केसरिया .....
(इनमें अनेक अन्य दोहे भी प्रचलित है)

घूमर (राग जलधर सांरग– कोमल ग़ व शुद्ध ध युक्त, ताल कहरवा)

म्हारी घूमर छै नखराली ए मां,
घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानैं रमतां ने लाडूडा लादो ए मां,
घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हारी रूणक झुणक पायल बाजै

ए मां, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै आलीजा री बोली प्यारी लागै
ए मां, घूमर रमवा म्हैं जास्यां

(यळ गीत राजस्थान की पहचान माना जाता है गायन, वादन, नृत्य तीनों शैलियों में स्थापित गीत है)

गणगौर (राग तिलक कामोद, ताल–दीपचंदी)

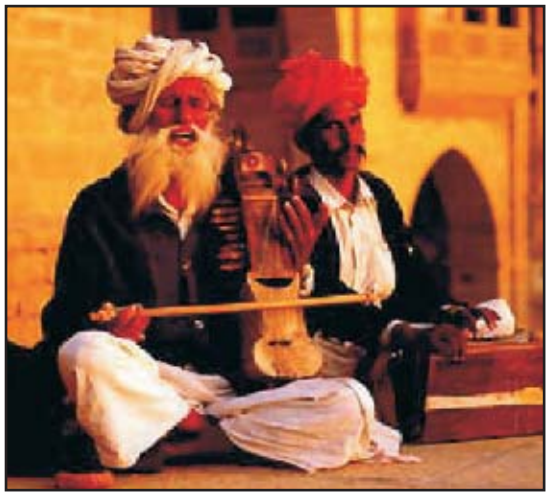

खेलण द्यों गणगौर भंवर
म्हानै पूजण द्यो गणगौर
हो जी म्हारी सहेल्यां जोवे बाट,
भंवर म्हानै खेलण दो गणगौर

माथा रे मेमद लावो भंवर
म्हारै माथा रे मेमद लाव
हो जी म्हारी रखड़ी रतन जड़ावों
भंवर म्हानै खेलण दो गणगौर

हिवड़ा ने हांसल लावों भंवर
म्हारे हिवड़ा ने हांसल लाव
हो जी म्हारै तिमण्यो पाट पुवावों
भंवर म्हानै खेलण दो गणगौर
(इसी प्रकार अन्य अंतरों में विभिन्न अंगों के आभूषणों की चर्चा है)

राजस्थान के लोक वाद्य –

सभी प्रकार के संगीत वाद्यों को चाहे शास्त्रीय संगीत के हों अथवा लोक संगीत के, प्रायः चार श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–

तत् वाद्य (तार लगे हुए)

जैसे –सांरगी, रावणहत्था, तंदूरा, भपंग, कमायचा

अवनद्ध वाद्य (चमड़े से मढ़े या ढके हुए)

जैसे –ढोल, ढोलक, चंग, डमरू

सुषिर वाद्य (फूँक या हवा से बजने वाले)

जैसे – नड़, अलगोजा, सुरणाई, पूंगी, बांकिया

धन वाद्य (धातु आदि को टकराकर)

जैसे –खड़ताल, मंजीरा, घंटी, घुंघरू

राजस्थान में इस हेतु प्रचलित तथ्य है कि–

''लोग जगत में यूं कहैं, बाजा साढ़ा तीन,

खाल, तार और फूँक का, अद्धताल सुरहीन''।

अर्थात् तत्, अवनद्ध व सुषिर तो पूर्ण वाद्य हैं तथा धन वाद्यों में स्वर के बजाय केवल ताल कार्य होने से अर्द्ध श्रेणी मानी जाती है। राजस्थान की वाद्य परम्परा में उपरोक्त चारों श्रेणियों के समृद्ध वाद्य उपलब्ध है। इस क्रम में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, रूपायन –जोधपुर, जवाहर कला केन्द्र – जयपुर व लोक कला मंडल – उदयपुर के वाद्य संग्रह एवं श्री रमेश बोराणा की पुस्तक – 'राजस्थान के लोक वाद्य' स्तुत्य प्रयास है।

तत् वाद्य –

कमायचा, सारिंदा, रावणहत्था, बीणै/तंदूरा, सांरगी, भपंग

अवनद्ध वाद्य –

ढोल, नगाड़ा, ढोलक, डफ/चंग, मादल, पाबूजी के माटे, डमरू

सुषिर वाद्य –

अलगोजा, नड़ मुरला, सुरणाई, बीन/पूंगी, मोरचंग, मशक, भूंगल, बांकिया नागफणी

धन वाद्य –

खड़ताल, मंजीरा, घंटी, घुंघरू, झालट, थाली, चिमटा, मटका।

राजस्थान के लोक नृत्य –

अपने रीति–रिवाजों, परम्पराओं, त्यौहार, उत्सव, संस्कार आदि के दौरान लोक जन–जीवन उमंग, उल्लास व आनन्द से अभिभूत व मस्त होकर व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से लयबद्ध अंग संचालन, करता है तो यह थिरकन नृत्य कहलाती है।

लोकनृत्यों की श्रेणी में राजस्थान के लोकनृत्य अत्यन्त सुन्दर परिष्कृत व अलंकृत है। ये नृत्य सुर, लय ताल व गीत से संतुलित रूप में बँधे हुए हैं। इनके माध्यम से किसी जाति अथवा वर्ग के परिधान, आभूषण, गीत,वाद्य, परम्पराओं, रीति–रिवाजों का विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है। गीतों व वाद्यों के समान ही यहाँ के नृत्यों को क्षेत्रीय, जातिगत व अवसरानुकूल श्रेणी में विभाजित कर सकते है।

जनजातियों के नृत्य–

भील, मीणा, सहरिया, गरासिया, कामड़, कंजर, कालबेलिया, आदि के पारम्परिक नृत्य

क्षेत्र–विशेष के नृत्य –

शेखावटी का गींदड़ नृत्य, मरू प्रदेश का गैर नृत्य, जसनाथियों का अग्नि नृत्य, भरतपुर का बम

राजस्थान के तत् वाद्य

कमायचा

सारंगी

गोपीचन्द

तन्दूरा / वीणै

इकतारा

रावण हत्था

सारिंदा

भपंग

जन्तर

राजस्थान के अवनद्ध वाद्य

ढोलक

मादल

नगाड़ा

ढोल

ताशा

घेरा

डफ/चग

डेरु

पाबू जी के माटे

डमरु

राजस्थान के सुषिर वाद्य (फूंक या हवा से बजने वाले)

अलगोजा

पूंगी / बीन

तुरही

मोरचंग

नागफणी

बांकिया

सुरणाई

मुरला

शंख

राजस्थान के धन वाद्य (धातु आदि को टकराकर)

मंजीरे

मटका

घुंघरु

झांझ

खड़ताल

चिमटा

नृत्य, जालौर का ढोल नृत्य आदि।

राजस्थानी लोक नृत्यों ने राजस्थान को विश्व मानचित्र पर उभारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक विदेशी इनका प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रदर्शन कर रहे हैं। कुछ प्रमुख लोक नृत्य जो राजस्थान की विशेष पहचान, तथा विशेष आकर्षण के केन्द्र है। इनमें– घूमर नृत्य, गैर नृत्य, तेराताली, चरी नृत्य, कच्छी घोड़ी नृत्य, भंवई नृत्य, कालबेलिया नृत्य, चकरी नृत्य आदि ..है।

लोकनृत्य–

घूमर –

घूमर अर्थात घूमना। इस नृत्य में घूमने के दौरान लहंगे/घाघरे का घेर व हाथों का लचक युक्त प्रदर्शन इसे अत्यन्त आकर्षक बनाता है। यह एकल व सामूहिक रूप में विवाह, पर्व व त्यौहारों पर सर्वत्र दर्शनीय है तथा राजस्थान की पहचान है। नृत्यांगना घूमने के दौरान झुक कर उठती है साथ में लहंगे का घेर व उंगलियों का घुमाव आकर्षण उत्पन्न करता है। यह नृत्य रजवाड़ी संस्कृति का प्रतीक है।

गैर नृत्य –

गैर खेलना,गैर नाचना, गैरघूमना। वैसे तो होली व जन्माष्टमी के अवसर पर सम्पूर्ण राजस्थान में इसके आयोजन दिखाई देते हैं लेकिन बाड़मेर व जैसलमेर की विशेष परिधान युक्त गैर दर्शनीय है, पुरूष लोग छड़ियाँ या तलवार लेकर गोल घेरा बनाते हुए ढोल, थाली, बांकियाँ, झांझ आदि की संगति से नृत्य करते है। घेरा बनाने, वेशभूषा, वाद्य आदि में क्षेत्रीय प्रभाव से अंतर दिखाई देता है।

तेराताली –

कामड़ जाति की नर्तकियाँ 13 मंजीरों को हाथ व पैरों में बाँधकर, नौ मंजीरे दायें पैर पर दो कोहनी पर तथा दो मंजीरे हाथों में घुमाते हुए मुँह में तलवार व सिर पर कलश रखकर मंजीरों को टकराकर ध्वनि व लय की

विविधता दिखाते हुए नृत्य करती है, इसमें पुरूष तंदूरा, ढोलक, मंजीरा की संगति से बाबा रामदेव के गीत गाते है। यह नृत्य एकल व सामुहिक दोनों रुपों में होता है

चरी नृत्य –

सर पर कलश द्वारा स्वागत तथा प्रज्ज्वलित अग्नि दोनों शुभ सूचक माने जाते हैं। चरी नृत्य इन दोनों का समन्वय है। किशनगढ़ चरी नृत्य हेतु प्रसिद्ध है, सिर पर चरी रखकर उसमें आग की लपटे (काकड़े–कपास के बीज द्वारा) आकर्षक वेशभूषा तथा नृत्यांगनाओं द्वारा विविध आकृतियाँ बनाना इसमें महत्वपूर्ण है। यह गुर्जर जाति द्वारा प्रचलित है। प्रख्यात नृत्यांगना फलकू बाई ने इसे पेशेवर नृत्य के रुप में प्रतिष्ठित किया है।

भंवई नृत्य –

ऐतिहासिक रूप से भंवई नृत्य के प्रारम्भ की अनेक कथाएँ है। एक मत भंवई को मूलतः गुजरात का भी मानता है, तो दूसरे मत में जाट वंश से इसकी उत्पत्ति मानी गई है। जो भी हो राजस्थान में प्रचलित शैली में सिर पर 5 से 11 घड़े रखकर, कील, तलवार, कलश, काँच के टुकड़ों, थाली के किनारों आदि पर चलकर चमत्कार प्रदर्शन युक्त नृत्य किया जाता है, इसमें शास्त्रीयता का पुट भी डालते हैं, पुरूष व महिला दोनों ही यह नृत्य करते हैं। संतुलन, तैयारी, मनोरंजन व चमत्कार प्रदर्शन इस नृत्य के विशेष गुण हैं। रुप सिंह शेखावत, कृष्णा व्यास व सांगीलाल इसके विख्यात कलाकार है।

कालबेलिया नृत्य–

सपेरा जाति का यह नृत्य काले कपड़ों पर विशेष सजावट युक्त वेशभूषा में शरीर के लोचदार व सर्पीले प्रदर्शन के साथ किया जाता है। इसमें बीन, ढोलक, खंजरी आदि वाद्यों की संगत होती है। विश्व प्रसिद्ध नृत्यांगना गुलाबो ने इस नृत्य को विशेष पहचान दी है।

कच्छी घोड़ी नृत्य

कुचामन, परबतसर, डीडवाना क्षेत्र से प्रचलित यह नृत्य आज सम्पूर्ण राजस्थान की पहचान है। नकली घोड़ी को नर्तक धारण कर हाथ में तलवार लेकर नकली लड़ाई का प्रदर्शन किया जाता है। वीरता व ओज को लय व गति से प्रदर्शित किया जाता है। नृत्य में कुल सात से आठ नर्तक होते है।

क्षेत्रीय भिन्नता के साथ कच्छी घोड़ी नृत्य भिन्न भिन्न नामों से अनेक राज्यों व विदेशों में भी प्रचलित है।

महत्वपूर्ण बिन्दु –

- लोक जन–जीवन के सुख–दुःख, आनन्द, करूणा, संवेग की सुरमयी अनुभूति लोक संगीत है।
- लोक संगीत से किसी जाति, क्षेत्र अथवा वर्ग विशेष का सम्पूर्ण सांस्कृतिक अध्ययन सम्भव है।
- राजस्थान में लंगा, मिरासी, ढोली, राव, भोपे, कलावंत आदि जातियाँ पूर्णतः संगीत पर ही आश्रित है।
- राजस्थानी लोक संगीत में शास्त्रीय संगीत के गूढ़ तत्वसमाहित हैं।
- घूमर, मांड, पणिहारी, गोरबंद, चिरमी, हिचकी, ओल्यूं आदि प्रसिद्ध गीत हैं।
- राजस्थानी लोक वाद्य तत्, अवनद्ध, सुषिर व घन 4 श्रेणियों में विभाजित हैं।
- कमायचा, सारंगी, चौतारा, रावणहत्था, बीन, अलगोजा,बांकिया, नड़, चंग,ढोल, नगाड़ा, भपंग, मुरचंग, मजीरा,आदि प्रमुख वाद्य है।
- तेराताली, घूमर, कालबेलिया, भंवई, कच्छी घोड़ी, गैर, चरी आदि प्रमुख नृत्य प्रकार है।
- राजस्थान के पर्यटन उद्योग में राजस्थानी लोक संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है।
- मांड गायन में अल्लाजिलाई बाई, कमायचा वादन में साकर खां, कालबेलिया नृत्य में गुलाबो विश्व विख्यात कलाकार हुए हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. ''केसरिया बालम पधारो म्हारे देस'' गीत है–
   (अ) मौसमी गीत (ब) मांड गीत
   (स) देवी–देवता का गीत (द) त्यौहार गीत
2. 'लंगा एवं मांगणियार' हैं–
   (अ) लोक देवता (ब) लोक नृत्य शैली
   (स) संगीत आश्रित जातियाँ (द) लोक कथाएँ

3. गुलाबो का सम्बन्ध किससे है–
   (अ) भंवई (ब) तेराताली
   (स) कालबेलिया (द) चरी नृत्य
4. निम्न में से तत् (तार युक्त) वाद्य है–
   (अ) बीन / पूंगी (ब) नगाड़ा
   (स) अलगोजा (द) रावण हत्था
5. सुमेलित कीजिये–

गोरबंद	–	अल्ला जिलाई बाई
मांड मायन	–	ऊँटों का शृंगार
कुरजां	–	कामड़
मोरचंग	–	एक प्रकार का पक्षी
तेराताली	–	लोक वाद्य

लघूउत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोक संगीत किसे कहते हैं?
2. लोक संगीत की कोई तीन विशेषताएँ ब्ताइये?
3. राजस्थान का कोई पारम्परिक गीत लिखिए?
4. वाद्य वर्गीकरण की चारों श्रेणियों के अन्तर्गत दो दो लोक वाद्यों के नाम लिखिए।
5. घूमर नृत्य का परिचय दीजिए।

विस्तृत प्रश्न –

1. राजस्थानी लोक गीतों की विविधता को समझाइये।
2. वाद्य वर्गीकरण के अन्तर्गत राजस्थानी लोक वाद्यों को समझाइये।
3. राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्यों की जानकारी दीजिये।

उत्तरमाला बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. ब 2. स 3. स 4. द